



SHRI MANOHAR DEVADOSS

Shri Manohar Devadoss is a painter and writer.

2. Born on 10th September, 1936, at Madurai, Shri Devadoss drew pictures ever since he could remember. From school, as early as Grade 6, he began grasping aspects relating to perspective drawings. By the time he was in his mid- teens he realized that he had a natural flair for capturing imageries on ink when he sketched heritage edifices and temple Gopurams. In 1957, he came out as a Chemistry Graduate from American College, Madurai.

3. In 1958, Shri Devadoss got a technical job at Oldham (a British firm at Chennai). Among many other things this company produced the compact miner's electric safety cap lamps systems. In those days many components were imported from England. As a Scientist, he worked diligently to manufacture these locally in Chennai matching the same quality.

4. In 1963, Shri Devadoss married Mahema, an accomplished academically brilliant girl with the heart of gold. Together, they pursued The Art of Giving for 42 years by crafting heritage greeting cards for charity with his ink drawings and her crisp text. He went to Oberlin College in the USA in 1969 to do his Masters degree in Chemistry and returned to Chennai in August, 1972 with many accolades. In December, 1972 following a car accident, his wife became paralyzed neck down, along with a host of other ailments. From 1975, he began losing his eyesight. Yet he pursued art diligently and gave the money earned to charity. He developed cataract in his left eye and became temporarily blind. He began writing an autobiographical novel on growing up in Madurai.

5. In 1983, after a cataract surgery, Shri Devadoss could work on ink drawings again albeit with great difficulty. This is when he started including intricate, detailed ink drawings to illustrate the narration in his book. His wife read to him, book after book while he drew. Despite the severe disadvantage, the quality of his art work was outstanding and high on precision and the number of books he and his wife read were more than ever before. Thus, he changed the adversity into advantage.

6. First book of Shri Devadoss 'Green Well Years' was published in 1997 and received many excellent reviews. And till 2014 he has written a total of 7 books, 6 of which have his art work. His 7 books saw many reprints, enjoying a total of 28 editions. His wife passed away in early 2008.

7. Shri Devadoss has also received the Award of Excellence for promoting Madurai through art by the Confederation of Indian Industry in 2012, Life Time Achievement Award by S R V School Trichy in 2011, Triumph of Courageous Life by Rotary Club of Ambattur Chennai in 2003, M.S. Subbulakshmi Award by Sankara Nethralaya in 2013 among others. He has also received countless appreciative letters. Prime Minister of India, vide his letter dated 19th February, 2018, wrote, "I am happy to hear about the details of extensive works which have turn documented the heritage of the ancient city of Madurai in the form of intricate sketches. The collective contributions your late wife and you made are indeed a matter of pride".

8. Now at 83, Shri Devadoss is totally blind but is working with his art work on his 8th book 'Chennai' which he did over a span of half a century and 9th book which is an autobiography. The man, who is blind, will be gifting vision to two people through corneal transplant, after his time.





श्री मनोहर देवदास

श्री मनोहर देवदास एक चित्रकार एवं लेखक हैं।

2. 10 सितंबर 1936 में मदुरै में पैदा हुए, श्री देवदास ने होश संभालते ही तस्वीरें खींचनी आरंभ कर दी थीं, स्कूल के दिनों में कक्षा 6 से ही उन्होंने पर्सपेक्टिव ड्राइंग के सभी पहलुओं को समझना शुरू कर दिया था। किशोरावस्था तक आते–आते, उन्होंने प्राचीन धरोहर रूपी इमारतों और मन्दिर गोपुरम के चित्र हाथ से निर्मित किए तो उन्हें यह आभास होने लगा था कि उनके अन्दर स्याही से चित्र उकेरने की नैसर्गिक प्रतिभा है, वर्ष 1957 में उन्होंने अमेरिकन कॉलेज, मदुरै से रसायन विज्ञान के स्नातक की उपाधि प्राप्त की।

3. वर्ष 1958 में, श्री देवदास को ओल्डम (चेन्नै स्थित एक ब्रिटिश फर्म) में एक तकनीकी पद पर नौकरी मिल गई। यह कंपनी कई अन्य चीजों के साथ–साथ कॉम्पैक्ट माइनर्स इलेक्ट्रिक सेफ्टी कैप लैंप सिस्टम का उत्पादन करती थी। उन दिनों यह कंपनी अनेक उपकरणों को इंग्लैंड से मंगाती थी। एक वैज्ञानिक के तौर पर, उन्होंने चेन्नै में ही स्थानीय स्तर पर उसी गुणवत्ता वाले इन उपकरणों के निर्माण के लिए बड़े ही लगन से काम किया।

4. 1963 में श्री देवदास का सर्वगुण संपन्न, मेधावी और सहृदय लड़की, महिमा से उनका विवाह हुआ। साथ–साथ कार्य करते हुए उन्होंने परोपकार और जनकल्याण के लिए 42 वर्षों तक स्याही से निर्मित रेखाचित्रों और पत्नी के आकर्षक और सुस्पष्ट उद्धरणों के साथ हेरिटेज ग्रीटिंग कार्डों की दस्तकारी से 'द आर्ट ऑफ गिविंग' का कार्य शुरू किया। सन् 1969 में वह रसायन विज्ञान में स्नातकोत्तर उपाधि हासिल करने के लिए यूएसए के ओबेरलिन कॉलेज चले गए और अगस्त, 1972 में कई एक पुरस्कारों के साथ चेन्नै वापस आ गए। दिसंबर, 1972 में एक कार दुर्घटना के बाद, उनकी पत्नी को अन्य बीमारियों के साथ–साथ गर्दन में लकवा हो गया। वर्ष 1975 से उनकी दृष्टि कमजोर होनी शुरू हो गई। फिर भी, उन्होंने पूरी लगन से इस कला को आगे बढ़ाया और अर्जित धन को परोपकारी कार्यों के लिए दान करते रहे। उनकी बाईं आंख में मोतियाबिंद होने से वह अस्थायी रूप से दृष्टिबाधित हो गए। मदुरै में रहते हुए उन्होंने एक आत्मकथात्मक उपन्यास लिखना आरंभ किया।

5. वर्ष 1983 में मोतियाबिंद की सर्जरी के बाद हालांकि, श्री देवदास ने बड़ी ही कठिनाई का सामना करते हुए, पुनः स्याही से चित्र बनाना शुरू कर दिया था। यह वही समय था जब उन्होंने अपनी पुस्तक में अपने कथानक को स्पष्ट करने के लिए स्याही से गूढ़ और सारगर्भित रेखाचित्रों को शामिल करना शुरू किया। उनकी पत्नी उनके लिए, एक के बाद एक पुस्तक का पाठ करती और वे रेखाचित्र बनाते। गंभीर अभावों के बावजूद, उनकी अनूठी और परिष्कृत चित्रकारी अभिव्यक्तिपूर्ण हो गई थी। उनके और उनकी पत्नी द्वारा पठित पुस्तकों की संख्या पहले से कहीं अधिक थी। इस प्रकार, उन्होंने अपनी बदहाली को खुशहाली में बदल दिया।

6. श्री देवदास की पहली पुस्तक 'ग्रीन वेल इयर्स' वर्ष 1997 में प्रकाशित हुई थी और उन्हें कई बेहतरीन समीक्षाएं प्राप्त हुईं। वर्ष 2014 तक उन्होंने 7 पुस्तकों का लेखन कार्य किया, जिनमें से 6 में उनका कलागत कार्य शामिल है। उनकी इन 7 पुस्तकों का कई–कई बार पुनर्मुद्रण हुआ और कुल 28 संस्करण प्रकाशित हुए। वर्ष 2008 की शुरुआत में उनकी पत्नी का देहांत हो गया।

7. श्री देवदास को कई अन्य पुरस्कारों के साथ–साथ कला के माध्यम से मदुरै के उन्नयन हेतु वर्ष 2012 में भारतीय औद्योगिक परिसंघ द्वारा अवार्ड ऑफ एक्सीलेंस, एसआरवी स्कूल त्रिची द्वारा वर्ष 2011 में लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड, रोटरी क्लब ऑफ अम्बातूर चेन्नै द्वारा वर्ष 2003 में ट्रम्फ ऑफ कॅरेजियस लाइफ, शंकर नेत्रालय द्वारा वर्ष 2013 में एम. एस. शुब्बुलक्ष्मी अवार्ड प्राप्त हुआ। उन्हें अनगिनत प्रशंसा पत्र भी प्राप्त हुए। भारत के प्रधान मंत्री ने, 19 फरवरी, 2018 के अपने पत्र में लिखा "मैं उन व्यापक कार्यों के विवरणों के बारे में सुनकर खुश हूं, जिन्होंने प्राचीन शहर मदुरै की विरासत को बारीकी से बनाए गए रेखाचित्रों के रूप में प्रलेखित किया है। उनकी स्वर्गीय पत्नी और उनके द्वारा किया गया सामूहिक योगदान वास्तव में गर्व की बात है।"

8. अब 83 साल की आयु में, श्री देवदास अब पूरी तरह से दृष्टिहीन हो चुके हैं, लेकिन वे अपनी कला संबंधी कार्यों के साथ अपनी 8वीं पुस्तक चेन्नै के बारे में काम कर रहे हैं, जिसमें उन्होंने आधी सदी से भी ज्यादा समय तक काम किया है और उनकी 9वीं पुस्तक उनकी आत्मकथा है। दृष्टिहीन होने के बावजूद, उन्होंने अपने जीवन के बाद भी कार्निया प्रत्यारोपण के लिए अपनी आंखें दान देकर दो लोगों को दृष्टि का अमूल्य उपहार देने का अनुपम कार्य करेंगे।